पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

पिछले अंक में हमने कहा कि हमारा सबकुछ हमारे आभामण्डल में या हमारे प्रकाशमय देह में इकट्ठा होता है, और जब हम अगले जन्म में बच्चे के शरीर में या गर्भ में प्रवेश करते हैं, उस समय ये सारी चीज़ें हमारे सामने उभर कर आती हैं। कोई बीमारी लाइलाज नहीं है, बल्कि उसका इलाज हमारे आभामण्डल में ही समाहित है।

इसलिए हमें अपने विचार तरंगों को सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ाना होगा। हमें बार-बार कहना है कि मैं इस समय सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ हो चुका हूँ, सम्पूर्ण रूप से खुश हूँ, तो पिछला वाला जो रिकॉर्ड है, उसपर एक नई लेयर चढ़ेगी और वो लेयर आपको पुरानी आदतों से मुक्ति दिलायेगी।

मन की जो दूसरी दीवार है, उसको हम भावनात्मक देह कहते हैं। इस देह को बहुत बारीकी से हमें समझना है। यह देह बहुत ही संवेदनशील (सेंसटिव) है, यह पानी की तरह होता है। जैसे पानी कोई भी रुकावट आने से सहज रास्ता बदल लेता है, वैसे ही जब हमारे इमोशन्स में, भावनाओं में रुकावट आती है, तो हम सभी बदल जाते हैं। उदाहरण स्वरूप जैसे हमारा किसी से लगाव है, और उसके लिए हमें कोई रोकता है तो हम रोकने वाले को बिना बताये उससे मुँह मोड़ लेते हैं, उससे बात नहीं करते हैं। फिर हम बिल्कुल भी ये नहीं सोचना चाहते कि ये बात मेरे लिए सही है या गलत है।

कोई भी नकारात्मक ऊर्जा जिसमें किसी भी तरह का भय है, डर है, तो भावनायें इधर-उधर जाने का मन बनाती हैं। उसे उल्टे-पुल्टे बहुत सारे विचार आते हैं, इसको दिल भी कहते हैं। इस दिल में

लॉजिक, तर्क या विश्लेषण की जगह नहीं होती, ये उस चीज़ के लिए किसी भी तरह का तर्क सुनने को तैयार नहीं, जिससे इसको नकारात्मक ऊर्जा आ रही हो। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति को यदि प्यार चाहिए तो चाहिए, उसमें लॉजिक नहीं लगता।

कुल मिलाकर प्यार व स्नेह भावनात्मक देह की नींव है। आपके अंदर जो प्यार दिल की गहराई में है किसी के लिए, वो आपको सुरक्षा देता है। इसके अभाव में यदि व्यक्ति को प्यार ना मिले तो वो बाह्य व्यक्ति या वस्तु या परिस्थिति से आपूर्ति करने का प्रयास करता है। इसे हम इनर चाइल्ड (आंतरिक शिशु) भी कहते हैं। यह तय करता है कि आप किससे कैसे मिलें। अर्थात् किसी से डर है, किसी से भय है, किसी से घृणा है, किसी से निराशा है, यह तय करता है हमारा इनर चाइल्ड। इसका अभाव भयंकर बीमारी पैदा करता है।

आंतरिक शिशु का विकास शुरु के 12 महीने के अनुभव के आधार से होता है। जिसके आधार से बच्चे का बिलीफ सिस्टम या बुद्धि फिक्स हो जाती है। और एक साल से लेकर अगले दो तीन साल में उसके अंदर दो तीन तरह के भय पैदा हो जाते हैं, जिसमें पहला डर है 'सुरक्षा का अभाव', वो उन बच्चों को होता है जिनको शारीरिक सुरक्षा नहीं मिलती है। जिसके कारण उसके अंदर मौत का डर होता है। जो हमेशा क्रोधी स्वभाव के कारण होता है। इन्हें दुनिया के दो रंग पसंद हैं, काला या सफेद, इसका अर्थ है कि इन्हें कुछ भी सम्पूर्ण चाहिए, चाहे काला या सफेद।

दूसरा है 'माता पिता के प्यार का अभाव', ये हमेशा सोचते हैं कि मुझे प्यार मिल पायेगा या नहीं, या कोई मुझे छोड़ के तो नहीं चला जायेगा, अर्थात् परित्याग का भय। माता पिता ने इसमें केवल शारीरिक आवश्यकताओं को देखा, उसे पर्याप्त प्यार नहीं दिया, ऐसे बच्चों को लगता है कि हम

- शेष पेज 7 पर...

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-23-2017

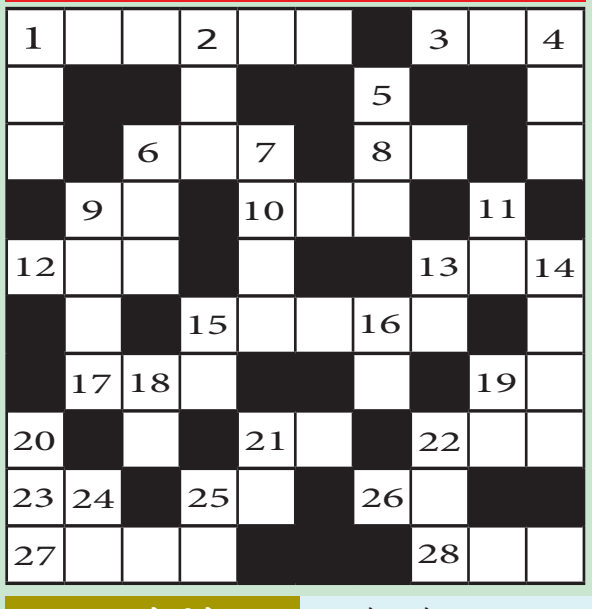

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. सुनना, कान (3)
2. ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्मा....कुमारी हो, कुँवारा (3)
4. टूटे हुए मिट्टी के बर्तन का बड़ा टुकड़ा, भिक्षा पात्र, तुच्छ वस्तु (3)
5. शिथिल होना, श्रांत होना, छकना (3)
6. दहाड़, गरज (3)
7. लाचार, कमज़ोर (4)
9. आज्ञा, आदेश (4)
11. समय, कालों का....महाकाल(2)
13. देवता, देव (2)
14. गठजोड़, गठबन्धन, साथ जोड़ना (4)
15. आज नहीं तो.... बिखरेंगे ये बादल (2)
16. गहरा, डरावना, कठोर (2)
18. परिवार, खानदान, वंश (2)
19. लत, खुमारी (2)
20. इनाम, मेहनताना, हक (3)
21. हिस्सा, अंश, भाग्य (2)
22. कठिन, दुर्घट (3)
24. नशा, नखरा, लाड़-प्यार (2)
25. बेकार, कबाड़, भंगार (2)

बायें से दायें

1. अंधे माँ-बाप को कंधे पर बिठाकर तीर्थ कराने वाला पुत्र (3-3)
3. काँवर, कांवड (3)
6. गर्म, तपत (3)
8. कार्य, काम (2)
9. कर्त्तव्य, ज़िम्मेवारी (2)
10. संसार, जगत, दुनिया (3)
12. ....तेरी गली में जीना तेरी गली में (3)
13. समझौता, मेल मिलाप (3)
15. महापात्र ब्राह्मण, मृत्युभोज में क्रिया कर्म कराने वाले (5)
17. पांडवों का एक भाई (3)
19. नवीन, नव (2)
21. तकदीर, नसीब, किस्मत (2)
22. दुपट्टा, पश्मीना शॉल का जोड़ा (3)
23. पुराना, प्राचीन (2)
25. नस, नब्ज़ (2)
26. शानदार, लाजवाब (2)
27. राज सिंहासन, राज तख्त (4)
28. धन, रुपया-पैसा (3)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

जयपुर-राज.। माननीय मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुषमा। साथ हैं ब्र.कु. चंद्रकला।

मोतिहारी-बिहार। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री राधा मोहन सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विभा।

बानुर-पंजाब। एस.एच.ओ. बिन्दर सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सविता। साथ हैं ब्र.कु. पूजा।

बरनाला-पंजाब। डिप्युटी कमिश्नर घनश्याम थोरी,आई.ए.एस. को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व आत्मस्मृति का तिलक देते हुए ब्र.कु. ब्रिज बहन। साथ हैं ब्र.कु. सुदर्शन बहन तथा अन्य।

कादमा-हरियाणा। हरियाणा भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की प्रदेशाध्यक्षा निर्मल बैरागी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वसुधा।

बून्दी-राज.। रक्षाबंधन के पावन पर्व का मूल महत्व समझाने के पश्चात् जिला कारागृह के कैदी भाइयों को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. भारती तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।